पुनर्स्थापन और दैवीय मुलाकात का संदेश

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम में आपको अभिवादन। सारी महिमा, आदर और सामर्थ सदा-सर्वदा उसी को प्राप्त हो। आमीन।

आज हम उत्पत्ति 16 में वर्णित सारै की दासी हाजिरा की कहानी पर एक नई दृष्टि से विचार करें। यह कहानी केवल ऐतिहासिक घटना नहीं है, बल्कि यह सिखाती है कि क्लेश के समय परमेश्वर से मुलाकात कहाँ और कैसे होती है।

हाजिरा का जंगल का अनुभव

हाजिरा अत्यंत कठिन परिस्थिति में थी। जब वह अब्राम से गर्भवती हुई — सारै के अनुरोध पर — तो विवाद उत्पन्न हुआ। सारै ने उसे इतना सताया कि हाजिरा जंगल की ओर भाग गई।

“अब्राम ने कहा, ‘तेरी दासी तेरे हाथ में है। जो तेरी दृष्टि
में अच्छा लगे, वही उसके साथ कर।’ तब सारै ने उसे सताया, और
वह उसके सामने से भाग गई।”
(उत्पत्ति 16:6)

बाइबल में जंगल अक्सर एकांत, परीक्षा और दैवीय मुलाकात का प्रतीक है। अकेली और गर्भवती हाजिरा हम में से उन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जो समस्याओं में घिरकर भागने की कोशिश करते हैं। फिर भी, जंगल में भी परमेश्वर देखता है।

झरने के पास प्रभु का दूत दिखाई देता है

हाजिरा भटकते हुए रेगिस्तान में पहुँच गई, लेकिन पवित्रशास्त्र एक महत्वपूर्ण विवरण पर ध्यान देता है:

“यहोवा का दूत उसे जंगल के एक सोते के पास मिला; वह सोता शूर
के मार्ग पर था।”
(उत्पत्ति 16:7)

यह “झरना” केवल भौतिक स्थान नहीं, बल्कि दैवीय ताज़गी, प्रकाशन और मुलाकात का प्रतीक है।

यही वह स्थान था जहाँ प्रभु का दूत उससे बोला:

“‘अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके अधीन रह।’”

(उत्पत्ति 16:9)

“‘मैं तेरे वंश को इतना बढ़ाऊँगा कि उसकी गिनती न की जा सके।’”
(उत्पत्ति 16:10)

“‘तू उसके नाम इश्माएल रखना, क्योंकि यहोवा ने तेरी दुर्दशा
को सुना है।’”
(उत्पत्ति 16:11)

बहुत से धर्मशास्त्री यहाँ “प्रभु के दूत” को मसीह के अवतार-पूर्व प्रगटन के रूप में समझते हैं, क्योंकि वे स्वयं परमेश्वर की तरह अधिकार के साथ बोलते हैं और आशीष का वादा देते हैं।

आज हमारे लिए झरना क्यों महत्वपूर्ण है?

यह कहानी एक सिद्धांत दर्शाती है—परमेश्वर के संदेश और उत्तर अक्सर तब आते हैं जब हम “जीवते पानी” अर्थात मसीह के निकट आते

हैं।

यीशु ने कहा:

“जो यह जल पीता है, वह फिर प्यासा होगा; परन्तु जो जल मैं उसे दूँगा, वह सदा के लिए प्यासा न होगा। वह जल उसके भीतर अनन्त जीवन का सोता बन जाएगा।”
(यूहन्ना 4:13–14)

आज बहुत से लोग पुकारते हैं—

“हे प्रभु, मेरी मदद कर!”
“प्रभु, मुझे चंगा कर!”
“प्रभु, मुझे आशीष दे!”

परन्तु हाजिरा की तरह यदि हम भी “झरने” अर्थात मसीह से दूर हैं, तो दैवीय मुलाकात चूक सकते हैं।

हमारे लिए आज का “झरना” क्या है?

व्यवहारिक रूप में मसीह के निकट आना मतलब:

परमेश्वर के वचन में समय बिताना (भजन 1:2–3)
यीशु की आज्ञाओं का पालन करना (यूहन्ना 15:10)
निरन्तर प्रार्थना में रहना (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)
विश्वासियों के संग संगति करना (इब्रानियों 10:25)
उपासना और समर्पित जीवन (रोमियों 12:1)

यदि हम मसीह से दूर रहते हैं, तो हम दैवीय दिशा या स्वर्गदूतों की मुलाकात की अपेक्षा नहीं कर सकते। हाजिरा झरने पर मिली — न अपनी सुविधा में, न विद्रोह में, बल्कि आवश्यकता, विनम्रता और ताज़गी की जगह पर।

विश्वासियों के लिए चेतावनी

हममें से कई लोग करियर, सोशल मीडिया, मनोरंजन और सप्ताहांत के कार्यक्रमों में व्यस्त हैं — पर आत्मिक बातों को अनदेखा करते हैं। हम संकट के समय परमेश्वर को पुकारते हैं, लेकिन जीवन-जल के स्रोत यीशु के पास नहीं रहते।

बाइबल लाओदिकिया की कलीसिया के बारे में चेतावनी देती है, जो अंतिम युग की कलीसिया का प्रतीक है:

“तू न तो ठंडा है और न गर्म… क्योंकि तू गुनगुना है, मैं
तुझे अपने मुँह से उगल दूँगा।”
(प्रकाशितवाक्य 3:15–16)

हम अंतिम दिनों में जी रहे हैं। मसीह के आगमन से संबंधित सभी भविष्यवाणियाँ पूर्ण हो चुकी हैं (मत्ती 24)। आज की कलीसिया को झरने — यीशु मसीह — के पास लौटना चाहिए।

क्या आप तैयार हैं?

क्या आपने अपना जीवन मसीह को दिया है?
क्या आप प्रतिदिन उसके साथ संगति में चलते हैं?
क्या आप यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेना चाहते हैं, जैसा प्रेरितों के काम 2:38 में बताया गया है?

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp